पुस्तक समीक्षा

वैज्ञानिक भारत का निर्माण : वैज्ञानिक उपलब्धियों का दस्तावेज

विश्व स्तर के वैज्ञानिक एवं चिंतक डा. रघुनाथ अनंत माशेलकर द्वारा विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के समय-समय पर दिए गए व्याख्यानों को आधार बनाकर विनोद कुमार मिश्र की संपादित एवं अनूदित पुस्तक "वैज्ञानिक भारत का निर्माण" न केवल परिवर्तन के दौर में भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उपलब्धियों को सामने रखती है बल्कि नई सहस्त्राब्दी की चुनौतियों के लिए भारत में नई रणनीतियों का खुलासा भी करती है।

डा. माशेलकर के सीमाहीन चिंतन, असीमित मस्तिष्क एवं उन्मुक्त वैज्ञानिक चिंतन ने संपूर्ण विश्व की स्थिति व भारतीय परिस्थितियों के गहन अध्ययन से नई सहस्त्राब्दी के विकास की संभावनाओं का साक्षात्कार संभव हुआ। ज्ञान के अर्थशास्त्र में बौद्धिक संपदा अधिकार की भूमिका, तीसरे विश्व की चिंताएं, भारतीय उद्योगों के समक्ष चुनौतियां, जनजागरण अभियान, पर्यावरण एवं तकनीक संबंधी चुनौतियां, उन्मुक्त विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विकास की साझेदारी, निर्माण उद्योग व पर्यावरण संबंधी मुद्दे, विकासशील देशों की दुविधा, तकनीकी हस्तांतरण, सूचना प्रौद्योगिकी व प्रजातंत्र आदि महत्वपूर्ण व ज्वलंत विषयों पर गहन चिंतन मनन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वैज्ञानिक भारत का निर्माण करने वाले महान वैज्ञानिकों में डाक्टर रघुनाथ अनंत माशेलकर का नाम अग्रणी है।

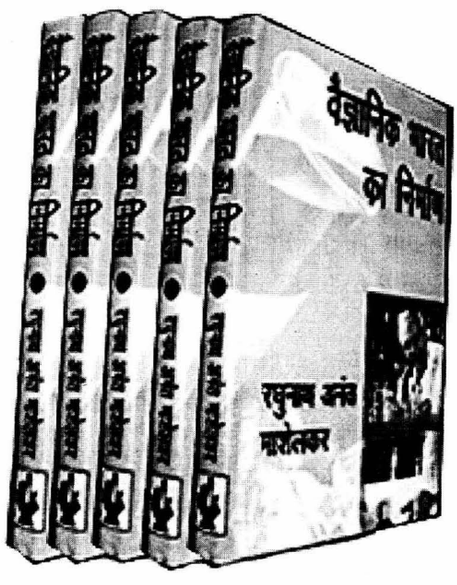

पुस्तक : वैज्ञानिक भारत का निर्माण
लेखक : रघुनाथ अनंत माशेलकर
अनुवाद एवं संपादन : विनोद कुमार मिश्र
प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
पृष्ठ : 224, मूल्य : 200 रुपए

जमीन से जुड़े आविष्कारकों की समस्याओं को सुलझाने तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के प्रयास इस महान वैज्ञानिक की मूल चिंता रही है। उन्होंने अपने सम्यक एवं व्यापक दृष्टिकोण से साबित किया कि बौद्धिक संपदा अधिकार की बाजार आधारित प्रकृति को मान्यता देते हुए परंपरागत ज्ञान, आविष्कारों व परंपराओं पद्धतियों को बचाने के लिए सही मॉडल बाजार पर न आधारित होने वाले अधिकारों के आधार पर विकसित किए जा सकते हैं। विश्व के प्रमुख प्रगतिशील उद्योग-सूचना प्रौद्योगिकी, माइक्रो- इलेक्ट्रॉनिक्स, औषधि उद्योग, जैव प्रौद्योगिकी, डिजाइनर द्वारा निर्मित पदार्थ, दूरसंचार आदि ज्ञान आधारित उद्योगों की रणनीतियों की सम्यक जानकारी के अलावा इस पुस्तक में शामिल लेख भारतीय सृजनात्मक एवं आविष्कारी भावना को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने के लिए अभिप्रेरित करते हैं।

पुस्तक में संग्रहित चिंतनपरक एवं सूचनाप्रद लेखों के माध्यम से यह तथ्य सहज ही उभर कर सामने आता है कि आविष्कारक सिर्फ औपचारिक प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहते बल्कि जमीनी जुड़ाव से अपने को हर वक्त साबित करते हैं। इसी कारण केवल वैज्ञानिक आविष्कार ही महत्व नहीं रखते बल्कि सामाजिक आविष्कारों के माध्यम से ही भारत के सामाजिक, कानूनी व आर्थिक संस्थानों में आविष्कारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं। अपने पंचशील सिद्धांत की व्यापकता को रेखांकित करते हुए बाल केंद्रित शिक्षा, महिला केन्द्रित परिवार, मानव केन्द्रित विकास, ज्ञान केन्द्रित समाज व आविष्कार केन्द्रित भारत के निर्माण पर बल देते हुए इस महान वैज्ञानिक के सामाजिक-सांस्कृतिक मानवीय सरोकारों का साक्षात्कार करवाती यह पुस्तक एक तरफ अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्वीकरण, निजीकरण तथा निगमीकरण की संभावनाएं तलाशती है तो दूसरी तरफ विज्ञान-अर्थ-व्यवस्था तथा विज्ञान-समाज के पारस्परिक संबंधों का जायजा लेती है।

• राजेन्द्र सहगल